

---

trailokyavijayavidyA

त्रैलोक्यविजयविद्या

Document Information

---

Text title : trailokyavijayavidyA

File name : trailokyavijayavidyA.itx

Category : kavacha, devii, devI, bIjAdyAkSharamantrAtmaka

Location : doc\_devii

Author : Traditional

Transliterated by : Nat Natarajan nat.natarajan at gmail.com

Proofread by : Nat Natarajan nat.natarajan at gmail.com, NA

Latest update : March 20, 2016

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 14, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

त्रैलोक्यविजयविद्या



॥ अथ त्रैलोक्यविजयविद्या ॥

ईश्वर उवाच

त्रैलोक्यविजयां वक्ष्ये सर्वयत्रविमर्दिनीम् ॥ १ ॥

ॐ हूं क्षूं लूं ॐ नमो भगवति दृष्टिणि भीमवकुत्रे मंडोत्ररूपे  
छिलि छिलि रक्तनेत्रे किलि किलि मडानिस्वने कुलु  
ॐ निर्मासे कट कट गोनसाभरणे चिलि चिलि शवमालाधारिणि द्रावय,  
ॐ मडारौद्रि सार्द्रयर्मकृताच्छटे विजृम्भ,  
ॐ पूत्यासिलताधारिणि,  
भुकुटीकृतापाङ्गे विषमनेत्रकृतानने वसामेदो विलिमगात्रे कड कड,  
ॐ डस डस कुङ्कु कुङ्कु ॐ नीलजुभूतवर्णोऽन्नमालाकृताभरणे विस्फुर,  
ॐ घण्टारवावकीर्णदिले, ॐ सिंसिस्थेऽरुणवर्णे,  
ॐ हूं हूं हूं रौद्र रूपे  
हूं हूं क्लीं ॐ हूं ॐ ओमाकर्षय ॐ धून धून,  
ॐ डे डः भः वज्रिणि भिन्ट,  
ॐ मडाकाये छिन्ट ॐ करालिनि किटि किटि मडाभूतमातः सर्वदृष्टनिवारिणि  
जये, ॐ विजये ॐ त्रैलोक्य विजये हूं हृट् स्वाहा ॥ २ ॥

नीलवर्णा प्रेतसंस्थां विशडस्तां यजेज्जये ।

न्यासं कृत्वा तु पञ्चाङ्गं रक्तपुष्पाणि डोमयेत् ।

सङ्ग्रामे सैन्यभङ्गः स्यात्त्रैलोक्यविजयापहात् ॥ ३ ॥


ॐ बहुरुपाय स्तम्भय स्तम्भय, ॐ मोडय, ॐ सर्वशत्रून्द्रावय,  
ॐ अन्नमाणमाकर्षय, ॐ विष्णुमाकर्षय, ॐ मलेश्वरमाकर्षय,  
ओमिन्द्रं टालय, ॐ पर्वतांश्चालय, ॐ सप्तसागराञ्छोषय,  
ॐ छिन्टिच्छिन्ट बहुरुपाय नमः ॥ ४ ॥

भुजङ्गं नामभृशमूर्तिसंस्थं विद्यादरिं ततः ॥ ५ ॥


इति त्रैलोक्यविजयविद्या सम्पूर्णा ॥

Proofread by Nat Natarajan, NA

---

——  
*trailokyavijayavidya*

pdf was typeset on July 14, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

